विषयानुक्रम

१. पृष्ठभूमि और सामान्यावलोकन १–२६

कर्मभूमिका प्रारम्भ १
आद्य तीर्थङ्कर २
तीर्थङ्कर नेमिनाथ ५
तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ ६
तीर्थङ्कर महावीर ६
सत्य एक और त्रिकालाबाधित ८
जैनधर्म और दर्शनके मूल मुद्दे ८
जैन श्रुत ९
दोनों परम्पराओंका आगमश्रुत ११
श्रुतविच्छेदका मूल कारण १२
कालविभाग १३
सिद्धान्त-आगमकाल १४
शापकतत्त्व १७
कुन्दकुन्द और उमास्वाति १८
पूज्यपाद १९
अनेकान्तस्थापनकाल १९
समन्तभद्र व सिद्धसेन १९
पात्रकेसरी व श्रीदत्त २०
प्रमाणव्यवस्थायुग २१
जिनभद्र और अकलंक २१
उपायतत्त्व २२
नवीन न्याययुग २५
उपसंहार २६

२. विषयप्रवेश २७–४७

दर्शनकी उद्भूति २७
दर्शन शब्दका अर्थ २८
दर्शनका अर्थ निर्विकल्पक नहीं ३१
दर्शनकी पृष्ठभूमि ३२
दर्शन अर्थात् भावनात्मक साक्षात्कार ३३
दर्शन अर्थात् दृढ़प्रतीति ३४
जैन दृष्टिकोणसे दर्शन अर्थात् नय ३५
सुदर्शन और कुदर्शन ३७
दर्शन एक दिव्यज्योति ३८
भारतीय दर्शनोंका अन्तिम लक्ष्य ३९
दो विचारधाराएँ ४२
युगदर्शन ४५

३. भारतीय दर्शनको जैनदर्शनकी देन ४८–६७

मानस अहिंसा अर्थात् अनेकान्त दृष्टि ४८
वस्तु सर्वधर्मात्मक नही ५०
अनेकान्तदृष्टिका वास्तविक क्षेत्र ५०
मानस समताकी प्रतीक ५१
स्याद्वाद एक निर्दोष भाषा शैली ५२
अहिंसाका आधारभूत तत्त्वज्ञान : अनेकान्तदर्शन ५३
विचारकी चरमरेखा ५४
स्वतः सिद्ध न्यायाधीश ५५
वाचनिक अहिंसा : स्याद्वाद ५६
स्यात् एक प्रहरी ५७
स्यात्का अर्थ शायद नहीं ५७
अविवक्षितका सूचक 'स्यात्' ५८
धर्मज्ञता और सर्वज्ञता ५८
निर्मल आत्मा स्वयं प्रमाण ६०
निरीश्वरवाद ६२
कर्मणा वर्णव्यवस्था ६४
अनुभवकी प्रमाणता ६५
साधनकी पवित्रताका आग्रह ६६
तत्त्वाधिगमके उपाय ६७

४. लोकव्यवस्था ६८–१३१

लोकव्यवस्थाका मूल मन्त्र ६८
परिणमनोके प्रकार ७०
परिणमनका कोई अपवाद नही ७१
धर्मद्रव्य ७२
अधर्मद्रव्य ७३
आकाशद्रव्य ७३
कालद्रव्य ७३
निमित्त और उपादान ७५
कालवाद ८०
स्वभाववाद ८१
नियतिवाद ८२
आ० कुन्दकुन्दका अकर्तृत्ववाद ८८
पुण्य और पाप क्या ? ९२
गोडसे हत्यारा क्यो ? ९२
एक ही प्रश्न एक ही उत्तर ९३
कारणहेतु ९५
नियति एक भावना है ९५
कर्मवाद ९६
कर्म क्या है ? ९८
कर्मविपाक १०१
यदृच्छावाद १०४
पुरुषवाद १०४
ईश्वरवाद १०५
भूतवाद १०७

अव्याकृतवाद १०८
उत्पादादित्रयात्मक परिणामवाद १०९
दो विरुद्ध शक्तियाँ १०९
लोक शाश्वत है ११०
द्रव्ययोग्यता और पर्याययोग्यता ११०
कर्मकी कारणता ११२
जड़वाद और परिणामवाद ११२
जड़वादका आधुनिक रूप ११५
जड़वादका एक और स्वरूप ११६
विरोधिसमागम अर्थात् उत्पाद और व्यय ११९
चेतनसृष्टि १२०
समाजव्यवस्थाके लिये जड़वादो अनुपयोगिता १२१
समाजव्यवस्थाका आधार समता १२२
जगत्स्वरूपके दो पक्ष विज्ञानवाद १२३
लोक और अलोक १२८
लोक स्वयं सिद्ध है १२८
जगत् पारमार्थिक और स्वतः सिद्ध है १२९

५. पदार्थका स्वरूप १३२–१४१

गुण और धर्म १३३
अर्थ सामान्यविशेषात्मक है १३४
स्वरूपास्तित्व और सन्तान १३४
सन्तानका खोखलापन १३६
उच्छेदात्मक निर्वाण अप्रातीतिक है १३७
दो सामान्य १३९
दो विशेष १३९
सामान्यविशेषात्मक अर्थात् द्रव्यपर्यायात्मक १४०

६. षट्द्रव्य विवेचन १४२–१९७

छह द्रव्य १४२
जीवद्रव्य १४२
व्यापक आत्मवाद १४३
अणु आत्मवाद १४४
भूतचैतन्यवाद १४५
इच्छा आदि आत्मधर्म हैं १४७
कर्त्ता और भोक्ता १४९
रागादि वात-पितादिके धर्म नहीं १५०
विचार वातावरण बनाते हैं १५०

जैसी करनी वैसी भरनी १५२
नूतन शरीरधारणकी प्रक्रिया १५५
सृष्टिचक्र स्वयं चालित है १५७
जीवोंके भेद : संसारी और मुक्त १५९
पुद्गलद्रव्य १६१
स्कन्धोके भेद १६२
स्कन्ध आदि चार भेद १६३
बन्धकी प्रक्रिया १६४
शब्द आदि पुद्गलकी पर्यायें है १६५
शब्द शक्तिरूप नही है १६६
पुद्गलके खेल १६७
छाया पुद्गलकी पर्याय है १६८
एक ही पुद्गल मौलिक १६९
पृथिवी आदि स्वतन्त्र द्रव्य नहीं १६९
प्रकाश व गरमी शक्तियाँ नहीं १७०
परमाणुकी गतिशीलता १७१
धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य १७२
आकाशद्रव्य १७३
दिशा स्वतन्त्र द्रव्य नहीं १७४
शब्द आकाशका गुण नहीं १७४
आकाश प्रकृतिका विकार नहीं १७५
बौद्धपरम्परामे आकाशका स्वरूप १७७
कालद्रव्य १७७
वैशेपिक मान्यता १७८
बौद्धपरम्परामे काल १७९
वैशेपिककी द्रव्यमान्यताका विचार १७९
गुण आदि स्वतन्त्र पदार्थ नहीं १८०
अवयवीका स्वरूप १८७
गुण आदि द्रव्यरूप ही है १८९
रूपादि गुण प्रातिभासिक नहीं है १९०
कार्योत्पत्ति-विचार १९२
सांख्यका सत्कार्यवाद १९२
नैयायिकका असत्कार्यवाद १९३
बौद्धोंका असत्कार्यवाद १९३
जैनदर्शनका सदसत्कार्यवाद १९४
धर्मकीर्तिके आक्षेपका समाधान १९५

७. तत्त्व-निरूपण १९८–२४५

तत्त्वव्यवस्थाका प्रयोजन १९८
बौद्धोंके चार आर्यसत्य १९९
बुद्धका दृष्टिकोण २००
जैनोके सात तत्त्वोका मूल आत्मा २०२
तत्त्वोंके दो रूप २०५
तत्त्वोंकी अनादिता २०६
आत्माको अनादिबद्ध माननेका कारण २०७
व्यवहारसे जीव मूर्तिक भी है २१०

आत्माकी दशा	२१०	दोपनिर्वाणकी तरह	
आत्मदृष्टि ही सम्यग्दृष्टि	२१४	आत्मनिर्वाण नहीं	२३२
नैरात्म्यवादकी असारता	२१७	निर्वाणमें ज्ञानादि गुणोंका	
पञ्चस्कन्धरूप आत्मा नहीं	२१८	सर्वथा उच्छेद नहीं होता	२३३
आत्माके तीन प्रकार	२२०	मिलिन्द्र प्रश्नके निर्वाण-	
चारित्रका आधार	२२०	वर्णनका तात्पर्य	२३४
अजीवतत्त्व	२२२	मोक्ष न कि निर्वाण	२३७
बन्धतत्त्व	२२४	संवरतत्त्व	२३८
चार बन्ध	२२५	समिति	२३९
आस्रवतत्त्व	२२६	धर्म	२३९
मिथ्यात्व	२२७	अनुप्रेक्षा	२४१
अविरति	२२७	परीषहजय	२४१
प्रमाद	२२८	चारित्र	२४१
कषाय योग	२२९	निर्जरातत्त्व	२४२
दो आस्रव	२३०	मोक्षके साधन	२४३
मोक्षतत्त्व	२३१		

प्रमाणमीमांसा २४६–४४०

ज्ञान और दर्शन	२४६	इन्द्रियव्यापार भी प्रमाण नहीं	२५८
प्रमाणादि व्यवस्थाका आधार	२४७	प्रमाण्य-विचार	२५८
प्रमाणका स्वरूप	२४९	प्रमाणसम्प्लव-विचार	२६२
प्रमाण और नय	२५१	प्रमाणके भेद	२६४
विभिन्न लक्षण	२५२	प्रत्यक्षका लक्षण	२६५
अविसंवादकी प्रायिक स्थिति	२५३	दो प्रत्यक्ष	२६८
तदाकारता प्रमाण नहीं	२५५	सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष	२६९
सामग्री प्रमाण नहीं	२५६	इन्द्रियोंकी प्राप्यकारिता अप्राप्यकारिता	२६९

सन्निकर्ष-विचार २६९
श्रोत्र अप्राप्यकारी नहीं २७१
ज्ञानका उत्पत्तिक्रम
अवग्रहादि भेद २७२
सभी ज्ञान स्वसंवेदी हैं २७३
अवग्रहादि बहु आदि अर्थोंके होते हैं २७४
विपर्ययज्ञानका स्वरूप २७४
असत्ख्याति आदि विपर्ययरूप नहीं २७५
विपर्ययज्ञानके कारण २७५
अनिर्वचनीयार्थख्याति नहीं २७६
अख्याति नहीं २७६
असत्ख्याति नहीं २७६
विपर्यज्ञान २७६
स्मृतिप्रमोष २७६
संशयका स्वरूप २७७
पारमार्थिक प्रत्यक्ष २७८
अवधिज्ञान २७८
मनःपर्ययज्ञान २७९
केवलज्ञान २७९
सर्वज्ञताका इतिहास २८०
परोक्ष प्रमाण २९२
चार्वाकके परोक्षप्रमाण न माननेकी आलोचना २९४
स्मरण २९५
प्रत्यभिज्ञान २९८
सः और अयमको दो ज्ञान माननेवाले बौद्धका खंडन २९९
प्रत्यभिज्ञानका प्रत्यक्षमें अन्तर्भाव ३००
उपमान सादृश्य-प्रत्यभिज्ञान है ३०१
नैयायिकका उपमान भी सादृश्यप्रत्यभिज्ञान है ३०२
तर्क ३०३
व्याप्तिका स्वरूप ३०८
अनुमान ३०९
लिंगपरामर्श अनुमितिका कारण नहीं ३०९
अविनाभाव तादात्म्य तदुत्पत्ति से नियन्त्रित नहीं ३१०
साधन ३११
साध्य ३११
अनुमानके भेद ३१२
स्वार्थानुमानके अंग ३१२
धर्मीका स्वरूप ३१३
परार्थानुमान ३१४
परार्थानुमानके दो अवयव ३१४
अवयवोंकी अन्य मान्यताएँ ३१५
प्रक्षप्रयोगकी आवश्यकता ३१६
उदाहरणकी व्यर्थता ३१७

हेतुस्वरूप-मीमांसा ३१९
हेतुके प्रकार ३२४
कारणहेतुका समर्थन ३२५
पूर्वचर, उत्तरचर और सहचर हेतु ३२७
हेतुके भेद ३२७
अदृश्यानुपलब्धि भी अभावसाधिका ३३१
उदाहरणादि ३३३
व्याप्य और व्यापक ३३४
अकस्मात् धूमदर्शनसे होने-वाला अग्निज्ञान प्रत्यक्ष नहीं ३३६
अर्थापत्ति अनुमानमें अन्त-र्भूत है ३३६
संभव स्वतन्त्र प्रमाण नहीं ३३८
अभाव स्वतन्त्र प्रमाण नहीं ३३८
कथा-विचार ३४०
साध्यकी तरह साधनोंकी भी पवित्रता ३४३
जय-पराजयव्यवस्था ३४५
पत्रवाक्य ३५०
आगमश्रुत ३५२
श्रुतके तीन भेद ३५३
आगमवाद और हेतुवाद ३५४
वेदके अपौरुषेयत्वका विचार ३५९
शब्दार्थप्रतिपत्ति ३६३
शब्दकी अर्थवाचकता ३६४
अन्यापोह शब्दका वाच्य नहीं ३६४
सामान्यविशेषात्मक अर्थ वाच्य है ३६६
प्राकृत-अपभ्रंश शब्दोंकी अर्थ-वाचकता ३७३
उपसंहार ३७९
ज्ञानके कारण ३८०
बौद्धोंके चार प्रत्यय और तदुत्पत्ति आदि ३८१
अर्थ कारण नहीं ३८३
आलोक भी ज्ञानका कारण नहीं ३८६
प्रमाणका फल ३८७
प्रमाण और फलका भेदाभेद ३८९
प्रमाणाभास ३९०
सन्निकर्षादि प्रमाणाभास ३९२
प्रत्यक्षाभास ३९२
परोक्षाभास ३९३
सांव्यवहारिक प्रत्यक्षाभास ३९३
मुख्यप्रत्यक्षाभास ३९३
स्मरणाभास ३९३
प्रत्यभिज्ञानाभास ३९३
तर्काभास ३९४
अनुमानाभास ३९४
हेत्वाभास ३९५
दृष्टान्ताभास ४००
उदाहरणाभास ४०२

बालप्रयागाभास ४०३
आगमाभास ४०३
संख्याभास ४०३
विषयाभास ४०४
ब्रह्मवाद-विचार ४०५
शब्दाद्वैतवाद-समीक्षा ४१५
साख्यक 'प्रधान' सामान्यवाद की मीमांसा ४१८
विशेष पदार्थवाद ४२७
(क्षणिकवादमीमांसा)
विज्ञानवादकी समीक्षा ४३५
शून्यवादकी आलोचना ४३५
उभयस्वतन्त्रवादमीमांसा ४३६
फलाभास ४३९

९. नयविचार ४४१–४७९

नयका लक्षण ४४१
नय प्रमाणकैदेश है ४४२
सुनय-दुर्नय ४४३
दो नय द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ४४६
परमार्थ और व्यवहार ४४७
द्रव्यास्तिक और द्रव्यार्थिक ४४८
तीन प्रकारके पदार्थ और निक्षेप ४४९
तीन और सात नय ४५१
ज्ञाननय, अर्थनय और शब्द-नयोंका विषय ४५२
मूल नय सात ४५२
नैगमनय ४५३
नैगमाभास ४५४
संग्रह-संग्रहाभास ४५५
व्यवहार-व्यवहाराभास ४५७
ऋजुसूत्र-तदाभास ४५९
शब्दनय और शब्दाभास ४६१
समभिरूढ और तदाभास ४६३
एवंभूत तथा तदाभास ४६४
नय उत्तरोत्तर सूक्ष्म और अल्पविषयक है ४६५
अर्थनय शब्दनय ४६६
द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकमे नयों का विभाजन ४६६
निश्चय-व्यवहार ४६७
द्रव्यका शुद्ध लक्षण ४७२
त्रिकालव्यापि चित् ही लक्षण ४७३
निश्चयका वर्णन असाधारण लक्षणका कथन है ४७६
पंचाध्यायीका नयविभाग ४७७

१०. स्याद्वाद और सप्तभंगी ४८०–५७२

स्याद्वादकी उदभूति ४८०
स्याद्वादकी व्युत्पत्ति ४८२
स्याद्वाद एक विशिष्ट भाषा-पद्धति ४८३
विरोध परिहार ४८६
वस्तुकी अनन्तधर्मात्मकता ४८७
प्रागभाव ४८७
प्रध्वंसाभाव ४८८
इतरेतराभाव ४८९
अत्यन्ताभाव ४९०
सदसदात्मक तत्त्व ४९१
एकानेकात्मक तत्त्व ४९२
नित्यानित्यात्मक तत्त्व ४९३
भेदाभेदात्मक तत्त्व ४९६
सप्तभंगी ४९७
अपुनरुक्त भंग सात हैं ४९८
सात ही भंग क्यों ? ४९९
अवक्तव्य भंगका अर्थ ५०१
स्यात् शब्दके प्रयोगका नियम ५०४
परमतकी अपेक्षा भंगयोजना ५०५
सकलादेश-विकलादेश ५०५
कालिदिकी दृष्टिसे भेदाभेदकथन ५०७
भंगोंमें सकल-विकलादेशता ५०८
मलयगिरि आचार्यके मतकी मीमांसा ५०९
संजयके विक्षेपवादसे स्याद्वाद नहीं निकला ५११
महापंडित राहुल सांकृत्यायनके मतकी आलोचना ५१२
बुद्ध और संजय ५१३
'स्यात्' का अर्थ शायद, संभव और कदाचित् नहीं ५१९
डॉ० सम्पूर्णानन्दका मत ५२०
शंकराचार्य और स्याद्वाद ५२१
स्व० डॉ० गंगानाथ झाकी सम्मति ५२५
प्रो० अधिकारीजीकी सम्मति ५२५
अनेकान्त भी अनेकान्त है ५२५
प्रो० बलदेवजी उपाध्यायके मतकी आलोचना ५२६
सर राधाकृष्णन्के मतकी मीमांसा ५२९
डॉ० देवराजके मतकी आलोचना ५३१
श्री हनुमन्तरावके मतकी समालोचना ५३१
धर्मकीर्ति और अनेकान्तवाद ५३२
प्रज्ञाकरगुप्त, अर्चट व स्याद्वाद ५३५
शान्तरक्षित और स्याद्वाद ५४०

कर्णकगोमि और स्याद्वाद ५४६
विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि और अनेकान्तवाद ५५१
जयराशिभट्ट और अनेकान्तवाद ५५२
व्योमशिव और अनेकान्तवाद ५५४
भास्कराचार्य और स्याद्वाद ५५५
विज्ञानभिक्षु और अनेकान्तवाद ५६०
श्रीकंठ और अनेकान्तवाद ५६१
रामानुज और स्याद्वाद ५६३
बल्लभाचार्य और स्याद्वाद ५६३
निम्बार्काचार्य और अनेकान्तवाद ५६४
भेदाभेद-विचार ५६५
संशयादि दूषणोंका उद्धार ५६६
डॉ० भगवानदासजीको समन्वयकी पुकार ५७२

११. जैनदर्शन और विश्वशान्ति ५७३–५७६

१२. जैन दार्शनिक साहित्य ५७७–५९२

दिगम्बर आचार्य ५७७
श्वेताम्बर आचार्य ५८४

ग्रन्थसंकेत-विवरण ५९३–५९९